B.A. History Hon's, Part-I

Paper: I, Unit-IV, Date:- 23.09.2020 Lecture No.: 22

Lession: ऋग्वैदिक अथवा पूर्व वैदिक आर्यों के सामाजिक जीवन

सिन्धु-घाटी की सभ्यता के अवसान के पश्चात् आर्यों ने भारतीय भूमि पर जिस सभ्यता का बीजारोपण कर उसे पल्लवित एवं पुष्पित किया, उसे हम प्राचीन भारतीय इतिहास में ऋग्वैदिक या पूर्ववैदिक सभ्यता कहते हैं। वैदिक काल के प्रथम भाग को ऋग्वैदिक काल कहा जाता है, क्योंकि इस काल की जानकारी ऋग्वेद ही सबसे प्रमुख स्त्रोत माना गया है। ऋग्वेद का रचना-काल 1500-1000 ई० पूर्व माना जाता है। इसमें देवताओं की स्तुति से 10,462 श्लोक एवं ऋचाएँ हैं। ऋग्वैदिक सभ्यता का सृजन उन दिनों से सप्त सैंधव प्रदेश 'पंजाब' तथा सरस्वती नदी के आस-पास में हुआ था।

ऋग्वैदिक सभ्यता का सामाजिक दशा

पारिवारिक जीवन: ऋग्वैदिक सभ्यता के सामाजिक संगठन का आधार परिवार होता था। सामान्यतः परिवार पैतृक या पितामह परिवार का प्रधान होता था। पिता के निधनोपरान्त उसका ज्येष्ठ पुत्र गृहपति होता था। ऋग्वेद के अनुसार एक पिता ने अपने एक अभाग्य पुत्र की आँख ही फोड़ दी।

विवाह पद्धति: सामाजिक संस्कारों में शादी-विवाह एक पवित्र संस्कार माना जाता था। साधारणतया एक से अधिक विवाह की प्रथा नहीं थी, किन्तु राजवंशों में बहु विवाह प्रचलित थे। ऋग्वेद के अनुसार विवाह के लिए लड़के की आयु 24 वर्ष तथा लड़की की आयु 16 वर्ष थी। यद्यपि विधवा-विवाह सर्वमान्य नहीं था, किन्तु ऋग्वेद के एक मंत्र से पता चलता है कि उस समय विधवा-विवाह वर्जित नहीं था।

स्त्रियों की दशा: ऋग्वैदिक समाज यद्यपि पितृ सत्तात्मक था, किन्तु फिर भी यहाँ स्त्रियाँ सम्माननीय दृष्टि से देखी जाती थी बहुत हद तक उन्हें पुरुषों के समान ही समस्त सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक अधिकार प्राप्त थे। पर्दा प्रथा का नामोनिशान नहीं था। ऋग्वेद में हमें घोषा, लोपामुद्रा, आपाला, विश्वारात्री अदिति सरमा, यमी आदि जैसी कई विदुषी महिलाओं की चर्चा मिलती है जो गौरव प्राप्त कर चुकी थी।

वर्ण व्यवस्था: ऋग्वैदिक सभ्यता के आर्यों के सामाजिक विभाजन के संबंध में दो मान्यताएँ उपलब्ध हैं और वे दोनो ही कल्पना पर आधारित हैं। पहली धारणा के अन्तर्गत ऋग्वेद के पुरुष सुक्त ने समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, एवं शुद्र नामक चार वर्गों में विभाजित था।

दूसरी धारणा के अन्तर्गत ऋग्वैदिकालीन भारतीय समाज कर्म या पेशा के आधार पर ही उपर्युक्त चार वर्गों में विभाजित था न कि जन्म के आधार पर जैसा कि आज है।

खान-पान: पूर्व वैदिक आर्यों का खान-पान सादा था। भोजन में रोटी, दूध, एवं माँस की प्रधानता थी। वे विभिन्न शाक-सब्जियों एवं फलों का सेवन करते थे। सोमरस तथा सुरा के शौकीन थे। वे लोग नदियों तथा कुँओं का शुद्ध जल पीने के काम में लाते थे।

मकान: सामान्यतः आर्यों का मकान लकड़ी या नरकट का बना होता था। घर के दूसरे हिस्से में पशुपाला भी होते थे। मकान में एक दालान भी होता था।

वस्त्राभूषण: आर्य अपनी वेश-भूषा पर विशेष ध्यान रखते थे। वे प्रायः तीन तरह के वस्त्र (धोती व कटिवस्त्र) नीविवास एवं अधिवास। वे अन्दर पहने जाने वाले वस्त्र नीवी तथा ऊपरी वस्त्र को वास एवं अधिवास कहते थे।

पूर्व वैदिक काल के आर्य श्रृंगार-प्रेमी भी थे। आभूषणों में हार, कवच, कुण्डल, कंगन, नुपुर पायल आदि प्रमुख थे।

शिक्षा: आर्यों को सम्भवतः मौखिक शिक्षा दी जाती थी क्योंकि उनकी लिपि का उल्लेख हमें नहीं मिलता।

आश्रम व्यवस्था: पूर्व वैदिक कालीन आर्यों के समाज में वर्णव्यवस्था भी थी। इस धर्म के अन्तर्गत सम्पूर्ण जीवन को मुख्यतः चार भागों में विभक्त किया गया था।

(i) ब्रह्मचर्य अवस्था के अन्तर्गत पुरुष को अत्यन्त संयमित जीवन व्यतीत करते हुए 25 वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करना पड़ता था।

(ii) गृहस्थी के अन्तर्गत 25 वर्ष से अधिक आयु के पुरुषों को शादी कर अपनी पत्नी एवं बच्चों के साथ जीवन बिताने की छूट थी।

(iii) वानप्रस्थावस्था के अन्तर्गत आर्यों को गृहस्थाश्रम का परित्याग कर अकेले वन में जाना पड़ता था।

(iv) संन्यास अवस्था के अन्तर्गत उन्हें सांसारिक मोह का त्याग कर एक संन्यासी के रूप में अन्तिम जीवन बिताना पड़ता था।

औषधि: वैदिक लोगों को चिकित्सा एवं औषधियों का भी ज्ञान हो चुका था। प्रायः औषधियाँ जड़ी-बूटियों से तैयार की जाती थी। टी.बी. यक्ष्मा जैसी भयानक बीमारियों का इलाज भी सफल ढंग से होता था।

आमोद-प्रमोद: आर्यों का जीवन शुष्क नहीं था, बल्कि अवकाश के समय या पर्व-त्योहार के अवसर पर अपना मनोविनोद भी तरह-तरह से करते थे। उनके मनोरंजन के मुख्य साधन नृत्य-संगीत, जुआ खेलना, रथ दौड़, मुक्काबाजी आदि थे।

वैदिक काल में सामाजिक दशा का महत्वपूर्ण रूप से माना जाता था। इस काल में समाज का व्यक्ति के साथ घनिष्ठ संबंध था।

डॉ॰ शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि प्राध्यापक, इतिहास विभाग
डी॰ बी॰ कॉलेज, जयनगर, मधुबनी